बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक -02 - 01- 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

नववर्ष की ढेर सारी शुभकामनाएं

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज कारक के बारे में अध्ययन करेंगे ।

कर्म कारक – संज्ञा या सर्वनाम द्वारा दी गई क्रिया का फल या प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे **कर्म कारक** कहते हैं। जैसे-

- माँ ने **बालक को** सुलाया।
- अध्यापक ने **छात्रों को** पढ़ाया।

3. करण कारक – जिसकी सहायता से कोई कार्य हो वह संज्ञा या सर्वनाम शब्द, करण कारक कहलाता है; जैसे

- कंस कृष्ण **के द्वारा** मारा गया।
- बढ़ई ने आरी से लकड़ी काटी।

4. संप्रदान कारक – 'संप्रदान' का शाब्दिक अर्थ है-देना। जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, वह संज्ञा या सर्वनाम पद संप्रदान कारक होता है। जैसे-

- आयुष **ने** रोहन **को** पुस्तक दी।
- महिला **ने** भूखे को भोजन दिया।

5. अपादान कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रकट हो, वहाँ अपादान कारक होता है। इसका 'परसर्ग' से होता है। जैसे-

- चिड़िया पेड़ **से** उड़ गई।
- पहाड़ों **पे** झरना बहा।

6. संबंध कारक – संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। जैसे-

- यह मेरा कंप्यूटर है।
- वह नेहा का घर है।

अधिकरण कारक – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार या उसके होने के स्थान का या समय का बोध होता है; उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे-

- **डाल पर** तोता बैठा है।
- बच्चे **कक्षा में** बैठे हैं।

8. संबोधन कारक – शब्द के जिस रूप में किसी को बुलाने या पुकारने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। संबोधन का अर्थ पुकारना। जैसे-

- अरे बबीत! इधर आओ।
- हे ईश्वर ! सबकी रक्षा करो।